अंतरा - शब्दशक्ति

प्रेमानंद - राधेश्याम

काव्य संग्रह

डॉ. उपासना पाण्डेय

प्रेमानन्द राधेश्याम

(काव्य संग्रह)

डॉ. उपासना पाण्डेय

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-66-7

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ. उपासना पाण्डेय

मूल्य : ४०.००रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Premanand Radhe Shyam' by 'Dr. Upasana Pandey'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार है |प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कुछ शब्द.....

'राधेश्याम' की युगल छवि प्रेम, आनन्द व भक्ति की प्रतीक है।प्रत्येक प्राणी सदैव आनन्द व प्रेम की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। इनको पाने के लिए कुछ भी करने को सहर्ष तत्पर है।वे अज्ञानता के अभाव में जीवन भर भटकते भी रहते हैं जबकि जिस प्रेम व आनन्द को वह ढूँढ़ रहे हैं, वह तो उनके पास है।अथवा यह कहना अधिक उचित होगा कि वह स्वयं आनन्दस्वरूप (अहं ब्रह्मास्मि) हैं। सम्भवतः यही कारण है कि मनुष्य स्वयं और उससे जुड़ी प्रत्येक वस्तु व सम्बन्धों से अत्यधिक प्रेम भी करता है।

मायावश इस सत्य से अनभिज्ञ वह वाह्य वस्तुओं में प्रेम व आनन्द का अन्वेषण करता रहता है।उन्हें न पाकर दुःखी और हताश होता रहता है। सम्भवतः हमारे किञ्चित पुण्य कर्मों के फलस्वरूप 'गुरुकृपा' से हमें सत्य का बोध होता है। परन्तु आत्मस्वरूप के बोध की प्रक्रिया इतनी सूक्ष्म व सामान्य मानव के लिए कठिन होती है कि उसके लिए हमें 'भक्ति' अवलम्बन की आवश्यकता होती है। निर्मल भक्ति के द्वारा ही हम स्वयं का बोध कर प्रभु-मिलन को उत्कण्ठित हो उठते हैं।

गुरुकृपा से प्राप्त उसी प्रेमानन्द राधेकृष्ण की भक्ति-स्नेह से सिञ्चित भावों को मैंने शब्दों के माध्यम से आप सुधीजनों के समक्ष रखने का प्रयास किया है। आशा है, भाव प्रवणता में यदि कोई त्रुटि हो गई हो तो क्षमा करते हुए मेरे भावों व श्रद्धा को अपना स्नेह प्रदान करने की कृपा करेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक (कविता संग्रह) इसी प्रयास का परिणाम है। अतएव इसको पूज्य गुरुवर्य श्री राम नारायण मिश्र जी के चरणकमलों में सादर समर्पित करती हूँ। जिनकी कृपा व

आशीर्वाद के फलस्वरूप यह पुस्तक आप सबके समक्ष है।

मैं अपने माता-पिता, भाई अभिषेक, राही, अंकिता, जीवनसाथी श्री मृत्युञ्जय पाण्डेय व समस्त परिवार को हार्दिक धन्यवाद देना चाहती हूँ; जिनकी प्रेरणा और आशीर्वाद के बिना इस सुखद क्षण की कल्पना भी नहीं कर सकती हूँ।

अन्त में डा० प्रीति सुराना जी एवं अन्तरा शब्द-शक्ति के प्रति सादर आभार अभिव्यक्त करती हूँ। आपके सहयोग से ही मेरा यह स्वप्न साकार हो पाया।

पुनः सभी को कोटि-कोटि धन्यवाद

डॉ. उपासना पाण्डेय

अनुक्रम

1.	राधेश्याम	5
2.	कन्हैया	6
3.	राधिका	7
4.	प्रभु श्रीकृष्ण	8
5.	बरसाने की होली	9
6.	राधा का कृष्ण विरह	10
7.	राधा की पीर	11
8.	रंग रसिया	12
9.	मोहनी मूरत	13
10.	राधा की भक्ति	14
11.	राधे-गोविन्द	15
12.	श्री राधेकृष्ण की महिमा	16

राधेश्याम

राधे ! राधे! राधे! राधेश्याम !
जपते-जपते हृदय को लो थाम।
इनकी युगल छवि अभिराम,
स्मरण मात्र से मिले गो धाम।

सारे मिट जाते सन्ताप,
प्रभु जो दामन लें थाम।
किसी के समक्ष न करो प्रलाप,
सारे कष्ट मिटेंगे अपने आप।

समय की गति अविराम,
चलती रहती सुबहो-शाम।
हर क्षण का कर सदुपयोग,
कट जाएँग तेरे सारे भोग।

हृदय की गिरह तुम लो खोल,
माया की खुल जाएगी पोल।
भक्ति का रस जीवन में घोल,
प्रभु की कृपा मिलेगी अनमोल।

जीवन का लक्ष्य होगा साकार,
जन्म-जन्म का मिटेगा भार।
जपते-जपते हृदय लो थाम,
राधे! राधे ! राधे! राधेश्याम !

कन्हैया

माँ यशोदा का परम दुलारा,
जग में वह सबसे न्यारा।
बाबा की आँखों का तारा,
गोपियों को प्राणों से प्यारा।

बंशी मधुर बजाने वाला,
भोली सूरत से मोहने वाला।
सारा जीवन जीवों पर वारा,
बाल्यकाल से असुर संहारा।

मस्तक पर धारे मुकुट मोर,
ब्रज का वह माखनचोर।
छाए जब दुःख घनघोर,
जीवन में लाए वह भोर।

भक्तों का वह सिरमौर,
कन्हैया तो है चितचोर।
उद्विग्न हृदय जब चाहे ठौर,
कन्हैया से बाँधे भक्ति की डोर।

राधिका

कृष्ण-हृदय की स्वामिनी,
राधिका अलबेली सरकार।
प्रेम-वंशी की मधुर रागिनी,
इनकी महिमा अपरम्पार।

वृन्दावन कण-कण वासिनी,
बृज-पवन में इनका संचार।
भक्ति-प्रेम की ये संगमनी,
अविरल आनंद की रसधार।

रासलीला की प्राणस्वरूपिणी,
अनन्य भक्ति इनका श्रृंगार ।
राधिका उत्कृष्ट प्रेम-प्रवर्तिनी,
चरण कमल वन्दन बारम्बार।

प्रभु श्रीकृष्ण

कान्हा की छवि इतनी प्यारी,
पल-पल जाऊँ मैं बलिहारी।
कहती है यह दुनिया सारी,
मेरे तो हैं बस कृष्ण मुरारी।

बंसी की धुन मन हर लेती,
हृदय आनंद- विभोर कर देती।
गोकुल में जब वह बजती,
बरसाने में मधुर धुन गूँजती।

राधा क्या गोपियाँ भी,
अपनी सुध-बुध खो देतीं।
कान्हा-बंसी के आकर्षक में
वह नंगे पाँव ही चल देतीं।

घर-द्वार की मर्यादा भूलीं
वह तो बस कान्हा की हो लीं।
वस्तुतः भव-बन्धन को तोड़ती,
एकनिष्ठ हो, कान्हा से जुड़ती।

जब आत्मा अधीर हो जाती,
प्रभु के अतिरिक्त शरण न पाती।
अपने मूल स्वरूप को जानती,
तब महारास की बेला आती।

बरसाने की होली

प्रेम के रंग में रंग गई राधारानी ,
होली में चले कान्हा की मनमानी।
एक क्षण किसी के जिया की जानी,
सबको अपने रंग रंगने की ठानी।

राधा संग गोपियों ने भी ठानी ,
कान्हा पर रंगभरी पिचकारी तानी।
कहीं गुलाल तो कहीं है पानी ,
सब रंग गए हरे ,गुलाबी,धानी।

अब ब्रजवासियों को ढाल सम्भालनी,
बरसाने में जो हैं लाठियाँ खानी।
सबने गुझिया संग ठंडाई छानी,
तभी तो होली हुई है मस्तानी ।

राधा का कृष्ण विरह

विरह की करुण कहानी,
गोपियों से कहे राधारानी।
जब से हुए मथुरा के स्वामी,
हमको भूले रासबिहारी।

उनकी स्मृति में नैना बरसे,
त्रिभंगी छवि-दर्शन हेतु तरसे।
कान्हा-विरह हुआ जब से,
यह भी विरक्त हुए सब से।

बरसाने की मनभावन गलियाँ,
तुम सखियों की प्यारी बतियाँ।
रास की वह मधुर स्मृतियाँ ,
काँटों सी चुभती अब रतियाँ।

कान्हा बिन जैसे हम तड़पी ,
उसकी आँच भी पहुँची होगी!
उनको निद्रा भी आती होगी?
हमारी स्मृति शेष तो होगी!

राधा की पीर

कृष्ण-विरह ने राधा की पीर बढ़ाई,
मनमोहन ने कैसी प्रीत निभाई।
गोकुल-वृन्दावन को कैसे जाएँ,
विरही हृदय को कैसे समझाएँ !

आँखों में बस कान्हा-छवि समाई ,
आँसुओं के लिए जगह रह न पाई।
हृदय की तड़प किस विधि मिटाएँ,
अब तो वह रो भी नहीं पाएँ ।

श्री राधे की व्यथा सही न जाई ,
कैसे हो सकते निष्ठुर कन्हाई ।
प्रेम-समर्पण की देख दीन दशाएँ,
उद्धव-हृदय प्रेमभक्ति से घबराए।

रंग रसिया

मोहे अपने रंग में रंग दो,
कहती है बरसाने की राधा।
मैं एक पल बन जाऊँ कान्हा,
तुम एक पल बन जाओ राधा।

हे निर्मोही! तभी तुम्हें मेरी,
विरह-पीड़ा का होगा अनुमान।
इस क्रीड़ा के अनुभव से ही,
मेरे कष्टों का सम्यक् होगा ज्ञान।

राधे-कृष्ण के प्रेम समर्पण की,
भक्ति बिन ज्ञान है आधा।
पल-पल निज श्वास में भर ली,
प्रेममयी निर्मल यह गाथा।

मोहनी मूरत

कान्हा की मोहनी मूरत भली,
वो न तो उनकी, छवि ही सही।
भक्तों ने जब मोहनी मूरत गढ़ी,
विरही हृदय को शान्ति मिली।

मूरत में कान्हा की त्रिभंगी छवि,
गले में वैजयन्ती माला पड़ि।
उस पर वंशी की मधुर हो ध्वनि,
हृदय संग हर लेती मति।

भक्ति का यह रूप मनोहर लगे,
चहुँ ओर राधेकृष्ण जयकारा लगे।
ताल-मृदंग की जब थाप लगे,
भजनों से सुरीली संध्या सजे।

इनसे जो हृदय में भक्ति जगी,
प्रभु के मिलन की आस बढ़ी।
कान्हा की मोहनी मूरत भली,
वो न तो उनकी छवि ही सही।

राधा की भक्ति

राधा की कृष्ण-भक्ति की धारा,
अविरल प्रेम से भीगा जग सारा।
अनन्य भक्ति की वह परिचायक,
श्री कृष्ण ही है उनके नायक।

उनके तन-मन में वही समाए,
कृष्ण-कृष्ण ही धड़कन गाए।
ग्वाल संग गोपाल बरसाने को जाए,
होली में रंग तभी तो आए ।

प्रेम का रंग सभी पर छाए,
रंग का उमंग सभी को भाए।
प्रियतम की भक्ति, भक्त का प्रेम,
भक्ति के इस रूप से सबका योगक्षेम।

राधे-गोविन्द

गोविन्द गोपाल राधे राधे,
भजे न मन काहे काहे।
मथुरा- वृन्दावन की राहें चाहे,
गोविन्द संग राधे आयें।

गोपियों के नैन राहें जोहे,
काहे न आए कान्हा मोरे।
वंशी की धुन बुलाए मोहे,
संग रास रचाएँ कृष्ण-राधे।

कृष्ण-भक्ति मोहे मोहे,
राधा की रीति सोहे मोहे।
प्रेम-भक्ति की डोर बाँधे,
गोविन्द गोपाल राधे राधे।

श्री राधेकृष्ण की महिमा

राधा-कृष्ण कीअमर गाथा,
काटती है हर भव- बाधा।
प्रेम से पूर्ण जीवन सम्पूर्ण,
कृष्ण बिना सर्वस्व अपूर्ण।

प्रेम-क्रीड़ा के विभिन्न आयाम,
प्रेमाभक्ति के यह मान।
अस्पर्श है सांसारिक काम,
लक्ष्य है मात्र गोकुलधाम।

महारास है इनमें सर्वश्रेष्ठ,
वहाँ भक्त है प्रभु से श्रेष्ठ।
भक्त जब होता भक्ति में लीन,
प्रभु होते भक्त के अधीन।

प्रभु हैं प्रेम का अक्षय पात्र,
समर्पित भक्त ही अधिकारी मात्र।
व्याकुल हृदय चाहे प्रेमानन्द,
वस्तुतः राधेकृष्ण ही हैं पूर्णानन्द।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. उपासना पाण्डेय

पिताजी - स्व. हरिनारायण पाण्डेय

माताजी - श्रीमती सावित्री पाण्डेय

पति - श्री मृत्युंजय पाण्डेय

जन्म - 14/10/1980 (प्रयाग)

शिक्षा - परास्नातक (संस्कृत), लब्ध स्वर्ण पदक, डी.फिल. इलाहाबाद विश्वविद्यालय

भाषा ज्ञान - हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी व उर्दू, मानद उपाधि।

पता - नौलखा पाली प्लास्ट, ए-146(एफ-4), रिको इन्डस्ट्रियल एरिया, भिवाड़ी, राजस्थान, पिन- 301019

संपर्क नं. - 8318764116

प्रकाशन - विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं वेबसाइट पर शोधपत्र, लेख कहानियाँ, लघुकथाऐं निरंतर प्रकाशित।

सम्मान - अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान इलाहाबाद 'राष्ट्रभाषा गौरव' 2009।
अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान इलाहाबाद 'साहित्य श्री' 2008।
हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 'वाग्विदेश्वरी' 2009।
कमल की कलम 2018 द्वारा आयोजित कविता-आमंत्रण में प्रशस्ति पत्र।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-66-7

मूल्य 00/-